कामकाजी (पेशेवर) महिलाओं की जीवन शैली पर कोविड़ –19 के प्रभाव

लक्ष्मी
शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

कामकाजी महिलाओं से यह अपेक्षा की जाती हैं कि वह परिवार को प्राथमिकता दें और कई बार इस प्राथमिकता की कीमत उन्हें पेशेवर जीवन को छोड़कर चुकानी पडती है। समाज में सदियों से अंतर्निहित रुढ़िवाद कहता है कि पुरुष पैसा कमायें और महिलाएं गृहस्थी सम्भालें और देखभाल का काम करें। परंतु सवाल यह उठता है कि घरेलू जिम्मेदारियां सिर्फ महिलाओं कि ही है। दरअसल इसे समझने के लिए हमें Theory of power को समझना होगा। जहां वित्तीय स्वतंत्रता एक ऐसी आवाज देती है जिसे परिवार ,समुदाय और देशव्यापी रुप से सुना जाता है। सत्ता और प्रभाव के इस सुख को पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था किसी भी स्थिती में बनाये रखना चाहती है।

कामकाजी स्त्री आज दफ्तरों, घरों, अस्पतालों, विद्यालयों, बैकों सभी प्रकार की सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं आदि मे कार्यरत अर्धशिक्षित अथवा सुशिक्षित महिलाओं को कामकाजी स्त्रियॉ कहा जाता है।''[1] कामकाजी शब्द 'कामकाज' मे ई प्रत्यय लगने से बना है। 'कामकाज' मे दो शब्द है– काम + काज। काम शब्द संस्कृत के कर्म से तथा काज शब्द संस्कृत के कार्य से व्युत्पन्न हुआ है। इस प्रकार वस्तुतः दोनो शब्दों की ध्वनि एक ही है परंतु अर्थ पर बल देने के कारण उसका प्रयोग दो बार हुआ है। अंग्रेजी मे कामकाजी के लिये working शब्द मिलता है working के मूल मे work जिसका अर्थ है बौद्विक तथा शारिरिक क्षमताओं का उपयोग करके जीविकोपार्जन के लिये किये जाने वाले कोई काम। कामकाजी – काम अर्थात कर्म, कार्य, धंधा ,इच्छा, नौकरी, रोजगार आदि। काजी अर्थात कर्म ,काम मे लगा रहने वाला उधमी। कामकाजी महिला शब्द का प्रयोग प्रायः नौकरी करने वाली महिला के संदर्भ मे किया जाता है अर्थात वे महिलायें जो घरों से निकल कर नियमित रूप से आर्थिक गतिविधियों मे व्यस्त रहती है। कार्यरत महिलायें शब्द उन स्त्रियों के लिये प्रर्युक्त होता है जो वेतन वाले कामधंधों मे लगी है और उनका परिश्रमिक किसी और को नही बल्कि सीधे उन्हे ही प्राप्त होता है।

नाश्ता, सफाई, बर्तन, तैयार होना मीटिंग मेल, टारगेट बच्चों की क्लासेज, लंच बनाना, फोन मेल मीटिंग टारगेट रात का खाना, कल की मीटिंग। ये महिलाओं के दिमाग से निकाली गई कार्यो की एक सूची है ये वो महिलाएं है जो आजकल घर से कार्यालय तक का काम कर रही है रुकिये ... सिर्फ कार्यालय का ही नहीं बल्कि घर और कार्यालय दोनों का काम कर रही

हैं,। इस सूची में आपको घर और कार्यालय के काम से जुडें तमाम शब्द तो मिल जायेगें लेकिन चैन और आराम जैसे शब्द तलाशने पर भी नहीं मिलेंगें ।

कोरोना वायरस के कारण हुए लाक डाउन से कई लोग वर्क फ्राम होम कर रहे थे महिलाएं भी इस दौरान घर से कार्यालय का काम कर रही थी लेकिन उनका रुटीन बुरी तरह बदल गया था वे घर और कार्यालय का दोगुना बोझ उठा रही थी ।

कोंविड – 19 की संकट या महामारी में ब्रिटेन के शाही घराने से लेकर भारत में ठेलों पर सब्जी बेचने वालों तक के व्यक्तियों को अपना शिकार बनाया है। जिस पर भी कोविड– 19 का दाव चला उसी को लपेटे में ले लिया। व्यक्तियों का कहना कि कोविड – 19 वायरस किसी की जाति, घर्म या लिंग देख कर वार नहीं करता है परन्तु अब तक के आंकडे इस दावें को गलत ठहरा रहे है। नया कोरोना वायरस अपना शिकार बनाने में भेद भाव कर रहा है। कोविड – 19 की महामारी मर्दो और औरतों पर अलग–अलग तरह से प्रभाव डाल रही है इस महामारी का पुरुषों और महिलाओं की सेहत से ही नहीं बल्कि माली हालत पर भी अलग–अलग असर दिख रहा है।

कोविड–19 महामारी की मृत्यु दर देख कर ही अंदाजा हो जाएगा कि ये वायरस लिंग भेद कर रहा । उदाहरण के लिए अमेरिका में कोविड –19 से मरने वाली महिलाओं की तुलना में पुरुषों की संख्या दो गुना है। इसी तरह पूरे पश्चिमी यूरोप में कोविड– 19 से मरने वाले 69 फीसदी सिर्फ पुरुष है। चीन या कोरोना का प्रकोप झेलने वाले अन्य किसी देशों में भी लगभग यही स्थिति बनी है। कोरोना वायरस से मरने वालों की संख्या का ब्योरा रखने वाले रिसर्चरों की टीम इसकी वजह तलाशने में जुटी हुई है हालाकि अभी तक इसका कोई सटीक कारण सामने नहीं आ सका है।

ऑक्सफोर्ड युनिर्वसिटी के प्रोफेसर फिलिप गोल्डर कहतें है कि महिलाओं में रोग प्रतिरोघक क्षमता पुरुषों की तुलना में बेहतर होती है। किसी भी वायरस को सक्रिय अवस्था आने के लिए खासतौर से कोरोना वायरस के लिए जिस प्रोटीन की आवश्यकता होती है वो एक्स क्रोमोसोम होता है। महिलाओं में एक्स क्रोमोसोम दो होते है जबकि पुरुषों में एक ही होता है। इस कारण से महिलाओं में किसी भी वायरस का प्रकोप झेलने की क्षमता ज्यादा होती है। लॉक डाउन के कारण लगभग सभी तरह की आर्थिक गतिविधियों पर अवरोध लग गया है। पूरी दुनिया में मंदी का दौर प्रारम्भ हो गया परंतु मंदी का यह दौर अन्य समय की मंदी से अलग रहा। अमेरिका में ही सिर्फ मार्च 2020 महीने में करीब 10.40 लाख लोग बेरोजगार हुए है।

नए शोघ से पता चलता हे कि भारत में महिलाओं को कोरोना महामारी के समय पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक नुकसान हुआ है। युनिर्वसिटी आफ मैनचेस्टर के ग्लोबल डेवलेपमेंट इन्स्टीटयूट की प्रोफेसर बीना अग्रवाल ने शोध के माध्यम से पाया कि महिलाओं को कोविड

(महामारी) लॉकडाउन के दौरान पुरुषों की तुलना में नौकरियों का अधिक नुकसान हुआ तथा लॉक डाउन के बाद रिकवरी भी बहुत कम रही।

युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं की हालत में महिलाएं और बच्चें ही सबसे ज्यादा प्रभावित होते है। दुनिया में महामारी का रुप लेने वाला यह कोरोना वायरस भी इसका अपवाद नहीं है। हमारे भारत में लम्बे लॉकडाउन कि वजह से महिलाओं पर दबाव है। यह बात अलग है कि इस महामारी चपेट में आने वालों में महिलाओं के मुकाबले पुरुषों की तादाद ज्यादा है। परंतु इस बीमारी के महामारी में बदलने से भारतीय परिवारों में अगर कोई सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है तो वो महिलाएं ही है। पहली 21 दिनों लॉकडाउन के दौरान पति व बच्चों के चौबीस घंटे घर पर रहने कि वजह से उन पर काम काज बोझा पहले कि तुलना में कहीं अधिक बढ गया । इसके साथ ही घरेलू नौकरानियों के छुट्टी पर जाने की वजह से उनकी समस्या और भी अधिक गम्भीर हो गयी क्योंकि अब कामवाली के तमाम कामों को भी करना पड़ता था इन सब में नौकरी पेशा महिलाओं की मुश्किलें भी कम नहीं रहीं, उनको एक ओर घर से काम करना पड़ रहा था और दूसरी ओर घर का भी काम करना पड़ रहा था। कई महिलाएं अधिकार संगठनों द्वारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर शहरी और ग्रामीण महिलाओं के बड़े समूह को भी सामाजिक सुरक्षा के दायरें में शामिल करने का अनुरोध किया है।

देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान जहां बच्चो को स्कूल से छुट्टी मिल गई और नौकरी पेशा लोगों को अपने दफ्तर नहीं जाने और घर से ही काम करने का मौका मिल गया था वहीं लाखों की संख्या में नौकरी पेशा महिलाओं की समस्याए दोगुनी हो गई थी क्योंकि अब उनको घर से अपने काम करने के साथ ही साथ घरों के भी सारे काम करने पड़ते थे। कोरोना महामारी का आतंक बढने के बाद महानगरों और शहरों की तमाम हाउसिंग सोसाइटिओ और कॉलोनियों में घरेलू काम करने वाली नौकरानियों के प्रवेश पर पूर्ण पाबंदी लगा दी गई थी तो बहुतो ने डर के कारण खुद ही आने से मना कर दिया जिसकी वजह से महिलाओं को अब झाडू पोछा से लेकर कपडें धोने तक के सभी प्रकार के काम भी करने पड़ते इसके बाद पति और बच्चों को समय पर खाना पीना देना और हजार दूसरे काम करने पड़ते थे।

आर्गनाइजेशन आफ इकोनामिक कोआपरेशन एण्ड डेवलपमेंट की ओर से वर्ष 2015 में किये गये एक सर्वेक्षण में कहा गया था कि भारतीय महिलायें दूसरे अन्य देशों की तुलना में रोजाना औसतन छः घण्टें ज्यादा ऐसे काम करती है जिनके एवज में उनको पैसें नही मिलते है जबकि भारतीय पुरुष ऐसे कामों में एक घंटे से भी कम समय ही खर्च करते है।

अनंत प्रकाश– संवादाता (13 जून 2020) के अनुसार इंदिरा गांधी को पसंद करने वाली मौली को जब उनकी पहली नौकरी मिली तो उनके लिए यह किसी जादू से कम नहीं था। वो अपनी रोल मॉडल की भॉति ही समाज में खुलकर अपने विचार रख रही थी इस नौकरी ने उनको एक खास दुनिया दी जिसमें वह बीते 30 वर्षो से जी रही थी। मौली की यह खुशी ज्यादा समय तक स्थायी न रह सकी और कोरोना वाइरस के चलते कुछ महिनों में ही इनकी यह दुनिया उजड़ गई। इस महामारी में मौली के ही जैसे करोड़ों

लोगों की नौकरियॅा चली गई। इस वाइरस की वजह से होने वाले लॉकडॉउन के कारण भारत में संगठित क्षेत्रों और असंगठित क्षेत्रों की नौकरियों में भारी कमी आई हैं।

सेंटर पार मानिटरिंग द इंण्डियन इकोनॉमी का हाल के ही सर्वे यह कहता हैं कि भारत में कम से कम 12 सें 13 करोड़ लोगों की नौकरियॅा मई महिने के शुरूआत में ही जा चुकी हैं। कई शोधार्थी बता चुके हैं , कि काम करने वाली महिलाओं की संख्या में भारी कमी आगे भी हो सकती हैं । ऐसे में यह वाइरस दुनिया को किस स्थिति में लाकर छोड़ेगा यह फिलहाल बयां कर पाना मुश्किल हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने भी अपनी हाल ही में अपनी रिपोर्ट में यह चेतावनी दी हैं , कि यह महामारी महिलाओं के समाज में बराबरी लाने के लिए पिछले कई दशकों व पुरानें संघर्षो पर पानी फेर सकती हैं।

रिपोर्ट यह कहती हैं कि इस महामारी के कारण महामारी के दौरान महिलाओं के बिना वेतन वाले कामों में बेपनाह बढ़ोत्तरी हुई है। इसमें (इस रिपोर्ट में) यह भी बताया गया है कि "कई देशो में सबसे ज्यादा कटौती अगर हुई हैं तो वह विशेषतः सेवा प्रदान क्षेत्रों में जैसे रिटेल, हॉस्पिटेलिटी, पर्यटन आदि से जुड़ी नौकरियों में देखी गई हैं क्योंकी इस क्षेत्रों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सबसे अधिक हैं।" परन्तु विकासशील अर्थव्यवस्था में स्थिति इससे भी अत्यधिक खराब हैं। वहॉ लगभग 70 फीसदी महिलाएं असंगठित क्षेत्र में ही काम करती हैं और उनके पास नौकरियॅा बचाए रखने के लिए विकल्प बेहद ही सीमित हैं।

पिछले वर्ष के आखिर से ही भारत में लिंग हिंसा में बढ़ोत्तरी हो रही हैं, इसमें इस कोविड महामारी ने आग में घी का काम किया हैं। अध्ययनों से यह बात सामने आयी है कि कोविड–19 के चलते श्रम बाजार में आई विकृति महिला श्रम उत्पादकता पर पुरूषों के मुकाबले कुप्रभाव अधिक रहा हैं इससे आर्थिक विकास पर बुरा असर भी देखने को मिला हैं।

भारत ने 2020 में पहली लहर के बाद ही कोविड महामारी पर विजय पाये जाने का एलान कर दिया। सबको यही लग रहा था कि कोरोना महामारी पर अब काबू हैं, ऐसे में कोविड –19 की दूसरी लहर अप्रत्याशित रूप से सबके सामने आकर सबको हक्का बक्का कर दिया। कोरोना के दूसरी लहर का प्रभाव जुलाई 2021 तक धीरे–धीरे कमजोर पड़ता जा रहा था। देश में कोविड महामारी के दैनिक मामले लगभग 40 हजार के नीचे आ गए थे। लिहाजा दूसरी लहर के प्रभावों का यही उपयुक्त समय रहा। कोरोना के पहली लहर के दौरान राष्ट्व्यापी लॉकडाउन लगाया गया था, बहरहाल दूसरी लहर के दौरान सरकारों के प्रतिक्रिया उतनी सख्त नही थी इतना ही नही लाकडॉउन जैसी पाबन्दिया स्थानीय तौर पर ही लगाई गई। दूसरी लहर की शुरूआत महाराष्ट्र से हुई। इसके बाद इसका असर दक्षिण की ओर फैला और अंत में उत्तर भारत भी इसके चपेट में आ गया। करोना की पहली लहर की सबसे बड़ी मार शहर के अर्थव्यवस्था पर पड़ी थी उस समय केवल खेतिहर

क्षेत्र ने अर्थव्यवस्था की नीव थामे रखी थी। नेशनल स्ट्रेटिस्टिकल ऑफिस के आंकडो के मुताबिक 2020–21 में अर्थव्यवस्था में 7.3 फीसदी की सिकुड़न के बावजूद कृषि क्षेत्र में सकारात्मक बढ़त दर्ज की।

चूंकि श्रम कि उत्पादकता पर मानव स्वास्थ का सीधा असर होता हैं। लिहाजा स्वास्थ का अतिरिक्त विकास पर बहुत प्रभाव पड़ता हैं। जब मानवीय स्वास्थ में सुधार होता हैं तब उत्पादकता मे भी बढ़ोत्तरी होती हैं और जिससे प्रति व्यक्ति आय भी बढती हैं। इसका कारण ये हैं कि अच्छे स्वास्थ्य के बदौलत काम के प्रत्येक इकाई को योगदान से ज्यादा उत्पाद प्राप्त होता हैं। आर्थिक साहित्य में भी इस बात की वकालत की गई हैं कि लैंगिक समानता के जरिये भी आर्थिक विकास में तेजी आती हैं। विकास में महिलाओं की भूमिका से जुड़े विचार में 1970 के दशक में जोर पकडा। विकास में लिंग की परिकल्पना पर ध्यान दिया जाये लगा।

लैंगिक असमानता की बढ़ती खाई– अध्ययनों से ये दृष्टिगोचर होता है कि कोविड –19 के चलते क्रम बाजार में आई विकृति का महिला श्रम उत्पादकता पर पुरूषो के मुकाबले कुप्रभाव अधिक रहा हैं। इससे आर्थिक विकास पर भी बुरा असर हुआ हैं महिलाओं पर सुंयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी रिर्पोट के मुताबिक अति निर्धनता वाले हालातो का सामना करने वाले प्रति 100 पुरूषों के मुकाबले महिलाओं पर बुरा प्रभाव कही अधिक रहा हैं इससे आर्थिक विकास पर भी बुरा असर हुआ हैं। महिलाओ पर सुंयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी रिर्पोट के आधार पर अति निर्धनता वाले हालातों का सामना करने वाले प्रति 100 पुरूषो के मुकाबले महिलाओं का आंकड़ा 118 हैं। इन आकडों से महामारी का महिलाओं और विकास पर पडने वाले प्रभाव को आसानी से समझा जा सकता हैं।

लैंगिक अंतर पर 2021 भी वैश्विक रिर्पोट से राजनितिक और आर्थिक भागीदारी से जुडे मामलों में दुनिया भर में लिंग के आधार पर व्याप्त अंतर का पता चलता हैं। इस रिर्पोट में महामारी के दौरान लैंगिक समानता को लेकर भारत के साथ ही साथ कई अन्य देशों की रैंकिंग में गिरावट दर्ज की गई हैं। रिपोर्ट में लगाये गये अनुमानो के मुताबिक वैश्विक स्तर पर राजनीति में महिलाओं और पुरूषों के बीच समानता लाने में औसतन 145.5 वर्षो का और समय लगने वाला हैं। वही दुनिया भर में आर्थिक अवसरों में देखे तो लैंगिक समानता हासिल करने में अभी भी औसतन 267.6 वर्ष लगेंगे।

कोविड– 19 महामारी के लैंगिक प्रभावों पर ओ आर एफ के एक आलेख के अनुसार एस डी जी 5 की दिशा में भारत ने जो तरक्की की थी, वो काफी हद तक जाया हो चुका हैं। महिला श्रम भागीदारी को लेकर भारत में गिरावट की प्रवृति देखने को मिल रही हैं महामारी ने हालात को और भी बद से बद्तर बना दिया हैं।

दूसरी लहर का प्रभाव पहली लहर के जैसा न था। दूसरी लहर में ज्यादातर गांव में संक्रमण फैला जिसने तबाही मचा दी, ग्रामीण महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, और केरल सबसे ज्यादा प्रभावित राज्यो मे से ही रहे हैं। स्वास्थ्य

सुविधाओ के कमजोर ढ़ांचे, टीके के प्रति बडे पैमाने पर दिखाई दे रही झिझक और आपूर्ति के पक्ष से जुडी पाबंदियो ने ग्रामिण आबादी की जिंदगी और आजीविका में अत्यधिक व्यवधान डाला।

इनके साथ–साथ खौफनाक नतीजो वाली दूसरी लहर और उससे जुडी अनिश्चितिताओं ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर और भी अत्यधिक दबाव डाला। महानगरों और शहरों से प्रवासी मजदूर अपने–अपने गॉव वापस लौटे और अपने गॉव में ही जीवन यापन करने के नए तौर तरीके ढूंढ़ने का फैसला लिया। पहली लहर की अपेक्षा दूसरी लहर में मृत्यु दर काफी ऊॅची रही। इसका ग्रामीण क्षेत्रों की आजीविका पर बहुत बुरा असर हुआ। ग्रामिण अंचलो में बेरोजगारी और भी बढी लोगों की बचत खत्म होगे लगी और उनकी माली हालात और भी खराब हो गई। मई 2021 में ग्रामीण भारत में बेरोजबारी दल 10.63 थी।

कामकाजी महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि सरकार ने महिलाओं कि ट्रेनिंग के लिये 800 संस्थाओं में 46658 सीटें तय की, पर जब इनमें मांग पूरी नही हो सकी तो प्राइवेट सेक्टेर ने महिलाओं के लिए खास सेंटर खोलनें शुरु कर दिये। अगर हम देश मे पढ़ी लिखी व अनपढ महिला कामगारों को जोड़ ले तो उनकी गिनती 12 करोड़, 77लाख ,20 हजार अड़तालीस है। यह दुनिया कि तमाम छोटे बड़े देश, देश से दूर आस्ट्रेलिया जैसे महाद्वीप की कुल आबादी से भी ज्यादा है। देश के जिन राज्यों में पढ़े– लिखे कि गिनती ज्यादा है वहां महिलाओं को नौकरियों के लिये मौके भी उतने ही अधिक है।''[2]

ग्रामीण और शहरी महिलाओं की चुनौतियॉ :–

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महिलाओं मे कार्योजन के प्रति सोच मे परिर्वतन और भी तीव्र गति से हो रहे है तथा भारतीय नारी अपनी पहचान बनाने के लिये ग्रामीण तथा शहरी दोनो क्षेत्रों में कार्योजन को अपना रही है। अगर लिंग के आधार पर हम कार्योजन कि व्याख्या करे तो पता चलता है कि पुरुषों कि तुलना मे उनका प्रतिशत काफी कम है। कुछ अर्थ्शास्त्रियों का मानना है कि –''किसी समाज में स्त्रियों कि स्थिति से उस समाज का विकास को सही सही नापा जा सकता है। शिक्षित कामकाजी स्त्रियों की स्थिति का अध्ययन करना भारतीय स्त्री समाज के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये जरुरी है।''[3]

आज भी गांवो के कई परिवारो में स्थायी या मौसमी प्रवासियों द्वारा घर भेजी जाने वाली रकम पर निर्भर होते हैं ऐसे में आमदनी में गिरावट आने पर घर वापस लौट रहे आप्रवासियों और उनके परिवारों पर सीधा कुप्रभाव पड़ता हैं। पिछले वर्ष (जून और अगस्त 2020 के बीच) किये गए एक सर्वेक्षण में यह पता चला था कि अपने गांव वापस लौटने पर प्रवासी मजदूरो की आमदनी में औसतन 85 प्रतिशत तक की गिरावट देखी गई थी। ऐसे में परिवारों की जमा बचत पूंजी कम होती चली गई। कई मामलों में तो परिवारों को अपने मौजूदा कर्ज चुकाने में अत्यधिक मुश्किलो का सामना करना पड़ा।

इतना ही नहीं अपनी बुनियादी जरूरतो को भी वो पूरा करने में असमर्थ थे और दूसरे के आगे हाथ फैलाने के लिए मजबूर हो गए। शहरों से गांव की ओर लौटने वाले परिवार के प्रवासी सदस्यो के भरण–पोषण के लिए महिलाओं पर कर्ज का बोझ और बढ़ गया।

दूसरी लहर में दो नए शब्दावालियों का प्रचलन हुआ पहला कोविड के चलते विधवा हुई महिला और कोविड के चलते अनाथ हुए बच्चे। ग्रामीण इलाको में कोविड के चलते विधवा हुई महिलाओं कि संख्या में बढ़ोत्तरी हुई। शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रो की महिलाओं को और भी अधिक चुनौतियों से दो–चार होना पड़ा। कोविन पोंटल में स्वयं को रजिस्टर कराने में उन्हे मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं की लाचार ढ़ाचे और डिजिटल मोर्चे पर व्याप्त असमानताओं ने समस्या को और भी विकराल बना दिया हैं। इतना ही नही, असंगठित क्षेत्र में काम कर रही महिलाओं को अपने बीमार परिजनों की देखभाल करने के लिए श्रम बाजार से पूर्णतः बाहर निकलना पड़ा। उनके बेरोजगारी की दर मई 2020 के पश्चात मई 2021 में दोबारा दहाई के अंक तक पहुंच गई। विश्वबैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में एक करोड़ बीस लाख से ज्यादा लोग कंगाली की हालत में पहुंच गए हैं। शहरी और ग्रामीण दोनो ही महिलाओं पर उसकी चोट बढ़ती जा रही हैं।

पिछले वर्ष के अन्त से ही भारत में लिंग–आधारित हिंसा में वृद्धि हो रही हैं और महामारी ने इसमें आग में घी का काम किया है। यौन हिंसा, ऑनलाइन उत्पीड़न और घरेलु दुर्व्यवहारों में बढोत्तरी हुआ हैं। एन.सी.डब्लू (राष्ट्रीय महिला आयोग) को 2020 में घरेलु हिंसा की 5,297 शिकायते मिली परन्तु 2019 में ये आंकड़ा 2,960 था, पिछले साल राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के दौरान महिलाओं को बड़ी संख्या में घरेलु हिंसा का शिकार होना पड़ा। इस वर्ष भी यह सिलसिला जारी हैं। 2021 में राष्ट्रीय महिला आयोग के सामने महिलाओं के खिलाफ अपराध के 2,000 केस सामने आयें। इनमे से करीब एक चौथाई 1/4 केस घरेलू हिंसा के हैं। हालांकि इस प्रकार के आंकडे पूरी तरह से हकीकत को बयान नहीं करते क्योंकि हिंसा झेल रही कई महिलाएं ऐसे अपराधों के खिलाफ आवाज उठाने के जगह पर चुप रहना बेहतर समझती है।

द लान्सेट के द्वारा प्रस्तुत के एक लेख में मातृ मृत्युदर में बढ़ोत्तरी होने की जानकारी दी गई हैं। इससे ऐसे संकेत भी मिलते हैं कि दूसरी लहर ने वैश्विक स्तर पर गर्भवती महिलाओं पर विपरित प्रभाव डाला हैं। भारत भी इसका अपवाद नहीं हैं। दूसरी लहर के दौरान मृत नवजातों के जन्म लेने और नई मॉ बनने वाली महिलाओं में अवसाद के केस में तेजी से बढ़ोतरी होती दिखाई दी।

महामारी ने शहरी भारत मे पेशेवर युवा महिलाओं के जीवन को और ज्यादा अनिश्चित बनाकर रखा हैं उनके हालात अब पहले से भी ज्यादा नाजुक हो गए। लिंक्डइन वर्क फ्रोर्स कॉन्फिडेन्स इंडेक्स से पता चलता हैं की महिला पेशेवरों के लिए व्यक्तिगत भरोसा सूचकांक मार्च 2021 में +57 था जो

जून 2021 की शुरूआत में गिरकर +49 पर पहुॅच गया। इसी कालखंड में कामकाजी पुरूषों के लिए व्यक्तिगत भरोसा सूचकांक मार्च के +58 से दो पायदान खिसककर +56 पर आ गया। साफ है कि पुरूषों के मुकाबले महिलाओं के सूचकांक मे चार गुना की गिरावट हुई। पेशेवर जीवन के साथ निजी जीवन की अत्यधिक जिम्मेदारियों का संतुलन बिठानें की कोशिश ने महामारी के दौरान पेशेवर महिलाओं के करियर की तरक्की को ठप सा कर दिया।

सेन्टर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनामी के अनुमानों से यह ज्ञात होता है कि जनवरी से अप्रैल 2021 के बीच ग्रेजुएशन और उससे अधिक कि योग्यता रखने वाली 19.3 प्रतिशत महिलाएं बेरोजगार थी और सक्रिय तौर पर नौकरियों कि तलाश में थी। ग्रामीण समुदायों तक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुचाने के लिए 2005 मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता अर्थात आशा कार्यकर्ताओं की नियुक्ति का दौर शुरू था। महामारी के समय उन्होनें बेहद अहम भूमिका निभायी। हालांकि कार्य (डयूटी) के दौरान बहुत सी आशा कार्यकर्ता कोविड कि चपेट में आई और उनमें से कईयों को अपनी जान तक भी गवानी पड़ी। भारत ने बड़े ही मेहनत , धैर्य और लगन के साथ दूसरी लहर से मुकाबला किया। आशा कार्यकर्ता सुमन धेबे का प्रेरणादायी किस्सा इसी मेहनत, धैर्य, लगन कि एक जीती जागती मिसाल हैं। दूसरी लहर के समय उन्होने रोजाना 12 से 13 किलो मीटर पैदल चलकर 5 गॉवो को कोविड–19 से बचाकर उन्हे संक्रमण से दूर रखने कि पूरी कोशिश की हैं।

कोरोना का असर (पेशेवर) कामकाजी महिलाओं पर

1.महिला बेरोजगारी में वद्धि :– रोजगार संबंधी मामलों में भी महिलाएं पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक प्रभावित हुई महामारी से पहले कार्यो में महिलाओं की हिस्सेदारी केवल 24 प्रतिशत थी लेकिन फिर भी महामारी के दौरान रोजगार खोने वाले लोगों की संख्या में उनकी हिस्सेदारी 28 प्रतिशत रही ।

2.खाद्य असुरक्षा की समस्याः– महिलाओं के साथ ही उनके परिवारों की आय में कमी होने के कारण खाद्य आपूर्ति में कमी आयी और परिवार की अन्य सदस्य की तुलना में महिलाएं अधिक प्रभावित हुई ।

3. प्रजनन स्वास्थ्य की समस्यायें :– कोविड महामारी के दौरान महिलाओं के स्वास्थ्य संकेतकों में भी गिरावट आयी क्योंकि महामारी के प्रभाव में वे गर्भनिरोधक तथा माहवारी संबंधी उत्पादों का खर्च उठा सकने में असमर्थ रही । अनुंमानतः 16 प्रतिशत महिलाओं को सैनेटरी पैड का उपयोग बंद करना पड़ा और प्रत्येक तीन महिलाओं में से एक से अधिक महिलाएं गर्भनिरोधक साधनों का उपयोग करने में असमर्थ हो गयी ।

4. अवैतनिक श्रमः– चूंकि भारतीय महिलाएं पहले से ही भारतीय पुरुषों कि तुलना में तीन गुना अधिक अवैतनिक कार्य करती है ऐसे में कुछ सर्वेक्षणों से भी ज्ञात होता है कि महिलाओं के लिए अवैतनिक श्रम में 47 प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

5. वंचित उपेक्षित समूहः— ऐतिहासिक रूप से वंचित उपेक्षित समूहों(मुसलमान, प्रवासी , एकल, परित्येक्ता ,तलाकशुदा) कि महिलाएं अन्य महिलाओं की तुलना में अधिक प्रभावित हुई ।

महिलाओं की जिंदगी में हुए कोरोना महामारी के कारण ये बड़े बदलाव :—

2020 मनुष्य की जीवन में कई बड़े बदलाव लेकर आया तो वही महिलाओं के जिंदगी में भी कोरोना महामारी का अच्छा खासा असर देखा गया। कोरोना लॉकडाउन के वक्त लोगो ने अपना सारा समय अपने घरों पर ही बिताया। ऐसे में कोरोना काल में महिलाओं ने बिना किसी शिकायत न जाने कितनी भूमिका निभाती नजर आई। घर, ऑफिस, बच्चे व बूढ़े न जाने कितने रास्तो में महिलाएं खुद को साबित करती रही हैं। इस कोरोना काल में महिलाओं की जिंदगी में ये 10 बड़े बदलाव हमें देखने को मिले हैंः—

1. (कोरोना) लॉकडाउन के दौरान जब सभी व्यक्ति अपने घर पर ही अपना समय व्यतीत कर रहे थे, उस समय महिलाएं मल्टी टास्कर की भूमिका में नजर आई। घर के काम से लेकर घर में बच्चो और बुजुर्गो का भी ख्याल रखने तक इन सभी जिम्मेदारियों को महिलाएं बडी ही खुबसूरती से निभा रही थी। जब सबको आराम करने का मौका मिला तब उस वक्त भी महिलाओं को अपने लिए ही समय नही मिल पाया।
2. लॉकडाउन में तो घर के सभी सदस्यों ने अपना सारा समय घर पर ही बिताया। ऐसे में उनके बीच में पुराने विवादो ने फिर जन्म लिया और घर में पुरानी बातो को लेकर बहस शुरू हुआ जिसका असर महिलाओं कि जिंदगी पर भी अत्यधिक पड़ा। उनके पुराने मसले जीवन में फिर तनाव लेकर आये।
3. कोरोना काल में बढते घर के विभिन्न कामों में हाथ बटाने के लिए पुरूष आगे आए लेकिन ये उनकी प्राथमिकता में नही थी ऐसे स्थिति में घर के पूरे काम को मैनेज करते हुए अपने परिवार के अन्य सदस्यो का भी ख्याल रखना महिलाओं के लिए सरल न था।
4. बच्चों की आनलाइन क्लासेस में बच्चो के साथ माताओं की भी बहुत मेहनत रही। घर के सारे काम को करने के बाद बच्चों की आनलाइन क्लासेस में भी समय देना ताकि बच्चे अपने पढ़ाई पर ध्यान दे सके। आनलाइन क्लासेस के वक्त उनके साथ बैठना, उनके प्रोजेक्ट बनाने मे उनकी सहायता करना तथा ऐसी चीजों को भी समझना जो इससे पहले तक नही की हो। इन सभी बातो ने महिलाओं को अत्यधिक प्रभावित किया।
5. कोरोना के समय घर पर सभी सदस्यों की मौजूदगी में महिलाओं के कामो में पहले से कई गुना बढोत्तरी हो गया।उनको हर समय इस बात का ध्यान रखना की पति, बच्चे, या घर के बुजुर्गो को किसी चीज की जरूरत तो नही ताकि उन्हे किसी तरह की कोई समस्या या दिक्कत न हो।

6. ऐसे में कुछ महिलाएं जो वर्किंग हैं, उन्हे वर्क फ्रॉम होम मिला। अब वे घर की जिम्मेदारियों के साथ ऑफिस के वर्क को भी करती रही हैं। ऐसे में उनकी चुनौतियॉ कई गुना तक बढ़ गयी।
7. इन सभी के बीच बढ़ता तनाव, जिसने महिलाओं को काफी प्रभावित किया। लगातार घर–ऑफिस के कामों व इसके साथ ही घर के दबे हुए पुराने मसलों को वापस से लेकर हुए विवाद ने महिलाओं को तनाव ग्रस्त कर दिया।
8. महिलाओं को स्वयं के लिए समय का नहीं मिल पाना मतलब "मी टाइम"। ऐसे में महिलाएं स्वयं के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पा रही है सिर्फ घर और बच्चों एवं परिवार के सभी सदस्यों का ख्याल रखते–रखते ही उनका पूरा वक्त कब निकल जाता है उन्हे यह स्वयं ही पता नही चलता।
9. ऑफिस और घर दोनों ही व्यवस्थित करने के कारण महिलाएं देर रात तक जाग कर काम को पूर्ण किया। ऐसे में पर्याप्त नींद न मिल पाने के कारण इन सबका भी सीधा असर उनके ही स्वास्थ्य पर पड़ा।
10. लम्बे समय तक एक ही स्थान पर बैठ कर काम को पूरा करने के कारण महिलाओं को कंधे व पीठ दर्द की भी समस्याओं का सामना करना पड़ा। जिसे वे नजर अंदाज कर अपने अन्य कामों को भी निपटाती रही।

''2011 कि जनगणना के अनुसार भारत मे साक्षरता की कुल दर 74.04 प्रतिशत है, जिसमें 82.14 प्रतिशत पुरुष और 65.46 प्रतिशत महिलायें साक्षर है। साक्षरता का सबसे अधिक प्रतिशत केरल मे 99.92 है। वहॉ पर महिला और पुरुष लगभग 100 प्रतिशत साक्षर है लेकिन उत्तर प्रदेश बिहार राजस्थान और मध्य प्रदेश मे महिलाओं मे साक्षरता का दर बहुत कम है जिसके कारण वहॉ पर महिलाओं का मानसिक विकास बहुत कम हो पाया है।''[4]

भारत में महिलायें आज अधिकाधिक संख्या मे वैतनिक एवं लाभपूर्ण व्यवसायों एवं काम धंधो में आने लगी है। इस देश मे समाज के निम्न वर्ग कि औरतें तो हमेशा से मजदूरी करती रही है, किंतु उच्च वर्गो कि महिलाएं अधिकतर अपनें घरों तक ही सीमित रही है। स्वतंत्र भारत में अब वे महिलायें भी घर की चाहारदीवारी से निकल कर उन धंधो मे भी जमा रही है जिन पर अब तक पुरुषों का अधिपत्य था।''[5] भारत मे कानूनी तौर पर स्त्री पुरुषों को समान अधिकार प्राप्त है लेकिन सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में स्त्री पुरुष समानता अभी भी पूरी तरह से प्रभावी नहीं हो पायी है।''[6]

संदर्भ सूची :–

1. ऑक्सफोर्ड एडवांस डिक्शनरी ऑफ करेण्ट इंग्लिश'', पृ0 992
2. संगीता,'' कार्योजित महिलाओं की कामयाबी का झण्डा'', अन्वीक्षिका शोध समग्र पत्रिका जुलाई – अगस्त 2007, अंक 3 ,मनीषा प्रकाशन, वाराणसी, पृ0 28,29
3. दुबे, एस0 सी0 '' मेन्स एण्ड बुमेन्स'', युनेस्को प्रेस ,पृ0 202
4. अग्रवाल, जी0 के0 , '' भारत मे समाज संरचना एवं परिवर्तन'', एस0 बी0 पी0 डी0 पब्लिशिंग हाउस आगरा 2012–13 पृ0

5. गुप्ता ,साधना, मुद्दा महिलाओं की योग्यता का आज 11 जून 1999 पृ0 6
6. महाजन सुमित्रा, दर्शन लक्ष्य और उपलब्धियॉ'',योजना, अगस्त 2001 अंक 5, पृ0 4
7. अर्गनाईजेशन आफ इकोनामिक को–आपरेशन एण्ड डवलपमेंट 2015
8. बी बी सी संवादाता निलेश कुमार 05 मई 2020
9. अनंत प्रकाश– . बी बी सी संवादाता (13 जून 2020)
10. सैंद्रिन लंगमबु और एमी ली बतर्ली, बी बी सी 100 वुमन 3 दिसम्बर 2020
11. Paul Anushree and Dutta Sangeeta –ORF-Observer Research Foundation
12. Kumar Sanjay ; A Social And Human Right Activist, feminist and atheist